गुणवत्ता के सौदागर

कुलदीप गर्ग

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गुणवत्ता हर क्षेत्र का एक मुख्य मुद्दा है। लेकिन गुणवत्ता के मायने क्या हैं? क्या हर क्षेत्र के लिए गुणवत्ता के मानदण्ड और उसके मायने एक ही होने चाहिए या क्षेत्र विशेष के हिसाब से इसमें फ़र्क हो सकते हैं? इन प्रश्नों पर विचार नहीं किया जाता। यह लेख, शिक्षा और सामाजिक सेवाओं के क्षेत्र में गुणवत्ता तय करने के लिए उद्योग जगत के मानदण्ड अपनाने के सन्दर्भ में विश्लेषण प्रस्तुत करता है। बातचीत की शैली में लिखा गया यह लेख इस बात पर प्रकाश डालता है कि उद्योग जगत में गुणवत्ता के मानदण्डों को किन आधारों पर तय किया जाता है और उन्हीं आधारों को लेकर शिक्षा की गुणवत्ता को तय करने में क्या समस्याएँ हो सकती हैं। सं.

तौसीफ़ : पिछले साल की बात है। हल्की सी ठण्ड थी, शाम का समय था और मैं टहल कर घर की ओर लौट रहा था। तभी देखा कि सामने से रामस्वरूप जी आ रहे हैं। रामस्वरूप जी एक शिक्षक रहे हैं। एक चिन्तनशील और शिक्षा पर लगातार एक पैनी नज़र रखने वाले व्यक्ति हैं। उनका कहना है कि "दर्शनशास्त्र पढ़ो नहीं, बल्कि दर्शन करो। उसे जीवन में करके देखो और अपनाओ"। मेरी और उनकी मुलाकात पिछले वर्ष यहीं टहलते हुए हुई थी। तब से हम मिलते रहे हैं और अपने अकादमिक, रोज़मर्रा के संघर्ष, राजनीतिक , सामाजिक और तमाम मुद्दों पर सोचते व बातचीत करते रहे हैं।

रामस्वरूपजी : अरे तौसीफ़ कहाँ हो भाई बहुत दिनों के बाद दिख रहे हो?

तौसीफ़ : नमस्कार, कैसे हैं आप? हाँ मैं ऑफिस के काम से बाहर गया हुआ था।

रामस्वरूपजी : अच्छा तो यह बात है। खैर और सुनाओ कैसी कट रही है ज़िन्दगी?

तौसीफ़ : जी बिल्कुल! बस यूँ ही टहलते हुए सोच रहा था कि अशरफ को अब स्कूल में दाखिला दिलवाना है? किस स्कूल में उसका दाखिला करवाना चाहिए? आप की नज़र में है कोई स्कूल जिसकी क्वालिटी अच्छी हो? जहाँ क्वालिटी एजुकेशन मिलती हो?

रामस्वरूपजी : तौसीफ़ भाई तुम कब से इस "क्वालिटी" के चक्कर में पड़ गए हो?

तौसीफ़ : मतलब?

रामस्वरूपजी : मतलब यह कि आज कल सब लोग "क्वालिटी" की बात कर रहे हैं। मानो कि यह कोई जादुई चीज़ हमारे हाथ लग गई हो। सब इसका गीत गा रहे हैं: "क्वालिटी एजुकेशन", "क्वालिटी हॉस्पिटल", "क्वालिटी सर्विस" आदि। न जाने क्या-क्या और कहाँ-कहाँ इस शब्द का इस्तेमाल हो रहा है आखिर ये चीज़ क्या है भाई? इसके मायने क्या है? मैं जितना समझ पाया हूँ उससे तो लगता है कि जनमानस में इसकी कोई साफ-सुथरी परिभाषा हो या छवि हो ऐसा लगता नहीं है।

तौसीफ़ : अच्छा ठीक है। आईए वहाँ उस चाय की थड़ी पर बैठते हैं और एक-एक चाय पीते हैं और वहीं बात करते हैं इस पर।

रामस्वरूपजी : ये भी ठीक है भाई, बहुत दिन हो गए हैं तुम्हारे साथ चाय नहीं पी, चलो।

(चाय की थड़ी पर दोनों चाय पीते हुए)

तौसीफ़ : हाँ तो मैं जितना समझता हूँ वो आपको बताता हूँ। देखिए हम इस चाय के उदाहरण से इसे समझते हैं। इस चाय की "क्वालिटी" इस बात में निहित है कि यह हमें संतुष्ट कर पाए। बाज़ार में वही चीज़ें टिक पाती हैं जिनमें क्वालिटी होती है। बाज़ार में वो चीज़ें ही टिकेंगी जो उपभोक्ता द्वारा खरीदी जाएँगी और उपभोक्ता उन्हीं चीज़ों को खरीदेंगे जो उनकी ज़रूरतों को संतुष्ट करेंगी।

रामस्वरूपजी : बहुत बढ़िया!!! तो इसका अर्थ यह है कि कोई चीज़ अच्छी है या बुरी इसका निर्धारण उपभोक्ता की संतुष्टि से होगा। अगर उपभोक्ता संतुष्ट हुआ तो चीज़ अच्छी; नहीं हुआ तो ख़राब। क्यों?

तौसीफ़ : आप बिल्कुल सही समझे। मैं यही कह रहा था।

रामस्वरूपजी : यदि हम यह मान लेते हैं कि यह सही है तो इसमें कुछ गम्भीर समस्याएँ हैं!

तौसीफ़ : इसमें क्या समस्या है?

रामस्वरूपजी : एक तो यह कि यदि उपभोक्ता की संतुष्टि ही पैमाना हो तो फिर दरअसल कोई मानक पैमाना तो हो ही नहीं सकता।

तौसीफ़ : मतलब? मैं ये नहीं समझा।

रामस्वरूपजी : ठीक है। कोई उदाहरण ले लेते है। चलो व्हिस्की का उदाहरण लेते है। जहाँ तक मुझे याद पड़ता है कि व्हिस्की में 47 प्रतिशत अल्कोहल होता है। कल को उपभोक्ता कहने लगें कि हमें तो उस व्हिस्की में मज़ा आता है जिसमें अल्कोहल की मात्रा 50 प्रतिशत हो। हो सकता है कि कुछ उपभोक्ता इसकी 60 प्रतिशत मात्रा पसन्द करें। और यह भी हो सकता है कि कुछ तो ये चाहें कि इसकी मात्रा 90 प्रतिशत हो!!! अब सवाल यह है कि क्या बाज़ार के लिए यह सम्भव होगा कि वह कोई मानक पैमाना बना सके। क्योंकि उसे तो उपभोक्ता के सन्तोष को देखना है। फिर तो उसे वो सभी प्रकार की व्हिस्की बनानी पड़ेगी जो उपभोक्ता चाहते हैं।

दूसरी समस्या यह है कि यहाँ "चाह" और "ज़रूरत" का फर्क बहुत ही धुँधला हो गया है। उपभोक्ता जो "चाहते" हैं बस वही सर्वोपरि हो गया है। लेकिन सवाल तो यह भी है भाई कि क्या इसकी उन्हें "ज़रूरत" भी है। कहीं ऐसा तो नहीं कि जो वो चाहते हैं उसकी ज़रूरत ही न हो? या वो वांछनीय न हो? जैसे मैं चाह सकता हूँ कि मुझे 90 प्रतिशत अल्कोहल वाली व्हिस्की पीने को मिले। लेकिन क्या यह वांछनीय है? जिन लोगों को अल्कोहल के अच्छे-बुरे प्रभाव के बारे में ज्ञान है वे आसानी से बता सकते हैं कि यदि मैं 90 प्रतिशत अल्कोहल वाली व्हिस्की पीता हूँ तो जल्दी ही मेरे साथ क्या हो सकता है? हो सकता है कि मैं अपने अबोध के चलते या ख़राब आदत के चलते किसी ऐसी चीज़ की चाहत रखता हूँ जो कि मेरे लिए, मेरे स्वास्थ्य के लिए वांछनीय न हो।

तौसीफ़ : ओह! अब मैं आपकी बात समझा। शायद उपभोक्ता के संतोष की बजाए हमें फिर कुछ और चीज़ों को आधार बनाना होगा। और उन चीज़ों पर यदि ध्यान दिया जाए तो शायद उपभोक्ता का संतोष स्वतः ही हम प्राप्त कर पाएँ, नहीं?

रामस्वरूपजी : अभी मैं अपने मन में बहुत स्पष्ट नहीं हूँ। मेरी समस्या यह है कि आखिर हम सब लोगों के मन में क्वालिटी के मायने क्या हैं? पहले हम वो तो समझें।

तौसीफ़ : ठीक है हम मिलकर कुछ परिभाषित करने की कोशिश करते हैं। क्योंकि मैं एक इंजीनियर हूँ इसलिए अपनी समझ से चीज़ों को रखता हूँ। मुझे लगता है कि औद्योगिक दुनिया में जब हम देखते हैं तो वहाँ क्वालिटी को लेकर काफी सजगता दिखती है। वहाँ हम जो कुछ भी बनाते हैं, उसके हर पक्ष के मानक-वर्णन बड़े ध्यान से पहले तैयार करते हैं। जैसे उस वस्तु का फंक्शन क्या है? यह फंक्शन वो कर पाए इसके लिए उसका भौतिक स्वरूप कैसा होना चाहिए? उसकी चौड़ाई, ऊँचाई, लम्बाई, मोटाई कितनी होनी चाहिए? उसका डिज़ाइन क्या है? वह किस पदार्थ का बनना चाहिए? उसकी बाहरी और अन्दरूनी सतह का कैसा टेक्सचर होना चाहिए? आदि हर उस चीज़ पर कुछ ऐसे मानक-वर्णन पहले इस तरह तैयार किए जाते हैं ताकि उनको नापा जा सके, चेक किया

जा सके। इस तरह एक पूरा मानक-वर्णन का मैन्युअल बनाया जाता है। फिर इस उत्पाद के निर्माण की हर उस अवस्था को पहचाना जाता है, जहाँ-जहाँ यह चेक किया जाता है कि उस अवस्था विशेष तक के मानक उसने प्राप्त कर लिए हैं कि नहीं? हर अवस्था पर जाँच होती है और आखिरकार वह उत्पाद अपने अन्तिम पड़ाव तक पहुँचता है।

किसी भी अवस्था में यदि कोई कमी या खराबी पाई जाती है तो उस अवस्था की निर्माण प्रक्रियाओं और अन्य कारकों की एक गहन जाँच होती है कि आखिर गलती हुई कहाँ? इस तरह जब सभी अवस्थाएँ एक दुरुस्त तरीके से एक ऐसा उत्पाद तैयार कर पाने में सक्षम हो जाती हैं, जो सभी मानकों को पूरा कर पाता है तब जाकर उनको स्वीकृत किया जाता है। यदि इस प्रक्रिया को देखें तो लगता है 'क्वालिटी' का अर्थ यहाँ उत्पाद विशेष के निर्माण-मानकों को प्राप्त कर लेने से है और उस उत्पाद द्वारा अपना फंक्शन ठीक वैसे ही कर लेने से है जैसा हम चाहते हैं।

रामस्वरूपजी : हाँ! तौसीफ़ भाई अब तुमने कुछ पते की बात की है। अब कुछ साफ़-साफ़ तस्वीर बनती है "क्वालिटी" की।

तौसीफ़ : हाँ!! इस पूरी प्रक्रिया को हम "क्वालिटी एश्योरेंस" या "गुणवत्ता सुनिश्चितकरण" कहते हैं। इसी प्रकार का "क्वालिटी ऐस्योरंस" स्कूल में भी किया जाना चाहिए और जब मैं आपसे पूछ रहा था कि आप मुझे किसी "क्वालिटी स्कूल" के बारे में बताएँ तो मैं कुछ इन्हीं अर्थों में आपसे पूछ रहा था। इसलिए स्कूल की क्वालिटी, या शिक्षा की क्वालिटी का अर्थ यहाँ शिक्षा की प्रक्रिया-मानकों को प्राप्त कर लेना होगा। वहाँ हम कोई उत्पाद तो बना नहीं रहे हैं। बल्कि एक बच्चे को शिक्षित कर रहे हैं। तो शिक्षित करने के कोई तो मानक होंगे? उन मानकों को प्राप्त करना ही "क्वालिटी एजुकेशन" होगी। शिक्षित करने की प्रक्रियाओं को भी कुछ सार्थक अवस्थाओं में बाँटा जा सकता है और हर अवस्था के मानक तैयार किए जा सकते हैं। ताकि कोई भी उन मानकों के बरक्स यह देख सके कि क्या इस अवस्था में की जाने वाली शैक्षिक प्रतिक्रियाएँ उन मानकों को प्राप्त कर रही हैं या नहीं? और...

रामस्वरूपजी : और रुक जाओ तौसीफ़ भाई ... थोड़ा धीरे चलो। देखो अब आप यहाँ वही गलती कर रहे हो जो कि आजकल ज़्यादातर लोग कर रहे हैं।

तौसीफ़ : अच्छा! हो सकता है। लेकिन मैं ज़रूर जानना चाहूँगा कि यह गलती क्या है?

रामस्वरूपजी : हाँ, हाँ मैं जरूर आपको बताऊँगा। आप रुकिए। मैं आपको बताता हूँ। मैं आपको यह सब कुछ बिन्दुओं में बताने की कोशिश करता हूँ :

1. पहली बात तो यह है कि हम यह समझें कि आखिर वो गलती क्या है जो तुम अभी कर रहे थे या कहें कि हमारे समाज में ज़्यादातर लोग आजकल कर रहे हैं। गलती यह है कि हम यह भूल जाते हैं कि चीज़ों के मायने या परिभाषाएँ उनके सन्दर्भों से बँधें होते हैं। किसी एक सन्दर्भ में जो परिभाषाएँ वाज़िब हैं ज़रूरी नहीं कि दूसरे सन्दर्भों में भी वाजिब हों। हमारे साथ यही हुआ है। हमने 'क्वालिटी' की उस परिभाषा को अपनी रोज़मर्रा की भाषा का हिस्सा बना लिया जो कि उद्योग जगत में लागू होती है। उद्योग जगत की शब्दावली आजकल हम पर इतनी हावी है कि हमने जीवन के हर क्षेत्र में उसका उपयोग करना शुरू कर दिया है। भले ही वह शब्दावली वहाँ अर्थ का अनर्थ कर देती हो! हमें यह समझना होगा कि उद्योग जगत में क्वालिटी की एक सीमित परिभाषा है। उद्योग जगत ने यह परिभाषा उनकी अपनी जरूरतों के मुताबिक गढ़ी है। लेकिन इसका अर्थ यह तो नहीं कि वह जीवन के हर क्षेत्र में लागू हो सकती है। हमें जीवन के अलग-अलग क्षेत्रों के लिए अलग-अलग परिभाषाएँ चाहिए।
2. उद्योगीकरण तो एक आधुनिक घटनाक्रम है। औद्योगीकरण के पहले क्या लोगों के मन में चीज़ों के 'बढ़िया' या 'घटिया' होने के अर्थ और उनके मानक नहीं होते थे? बिलकुल होते थे। दरअसल अचानक से इस औद्योगिक शब्दावली 'क्वालिटी' के इतना

लोकप्रिय होने के पीछे के कारणों को हमें समझना होगा। मुझे लगता है कि इसके पीछे एक बड़ा और आधारभूत कारण है हर चीज़ का 'मास प्रॉडक्शन' या कहें 'भारी मात्रा में उत्पादन'। हमें न केवल वस्तुओं का भारी मात्रा में उत्पादन करना पड़ रहा है बल्कि सेवाओं (स्वास्थ्य, शिक्षा, सुरक्षा आदि) को भी बड़े पैमाने पर मुहैया करवाना पड़ रहा है। इतने बड़े पैमाने पर कि जितना इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ। औद्योगिक सफलता से हम इतने प्रभावित हुए कि हमें लगने लगा जिस प्रकार उद्योगों में चीज़ों की क्वालिटी को सुनिश्चित किया जा सकता है वैसे ही अन्य चीज़ों (जिसमें कि सेवाएँ भी शामिल हैं) की क्वालिटी को भी सुनिश्चित किया जा सकता है। जबकि यह एक भयंकर गलती है।

3. थोड़ा ध्यान से सोचने की ज़रूरत है। उद्योगों में "क्वालिटी एश्योरेंस" एक तकनीकी प्रक्रिया है। यहाँ 'क्वालिटी' का एक तकनीकी अर्थ है: अपने इच्छित फंक्शन को ठीक से कर पाना, और निर्माण-प्रक्रिया के मानकों पर खरा उतर पाना। हम यदि थोड़ा सा इतिहास में झाँकें तो पाएँगे कि उद्योगों में "क्वालिटी एश्योरेंस" के मायने और प्रक्रियाएँ धीरे-धीरे विकसित हुईं और उनको निर्धारित करने में एक चीज़ की बड़ी भूमिका है– यह सवाल कि कैसे ज़्यादा से ज़्यादा मुनाफ़ा कमाया जाए? इस सरोकार के चलते उद्योगों में ऐसी प्रक्रियाएँ और घटनाओं ने जन्म लिया जिनको हम सामान्य तौर पर नज़रन्दाज़ कर देते हैं। जैसे मुनाफ़ा एक बड़ी शक्ति है जिसके चलते ऐसी प्रक्रियाओं को ईज़ाद करने के बारे में सोचा गया कि कैसे कम से कम समय में ज़्यादा से ज़्यादा उत्पादन किया जाए? और कैसे उत्पादन-लागत को घटाया जाए? हम देखते हैं कि इसके चलते ही हमने ऐसे कारीगरों को कल्पित किया जो कम से कम हुनरमन्द हों ताकि वे सस्ते में काम करने को राजी हो जाएँ। इसीलिए ऐसी निर्माण प्रक्रियाएँ विकसित की गईं जहाँ एक उत्पाद को कई छोटे-छोटे हिस्सों में तोड़ दिया जाता है और हर हिस्सा कोई एक या कुछ साधारण कारीगर बनाते हैं। हर हिस्से के डिज़ाइन और मानकों के मैन्युअल बनाए गए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि अन्त में ये सारे हिस्से आसानी से जोड़े जा सकें और एक पूर्ण उत्पाद की शक्ल ले सकें। हिस्सों में तोड़ना इसलिए ज़रूरी था क्योंकि छोटे-छोटे हिस्सों को बनाना आसान होता है और बहुत कम समय में ज़्यादा मात्रा में बनाया जा सकता है। दूसरा, या तो कारीगर खुद मैन्युअल देख कर यह जान सकता है कि उसने उस हिस्से के तय मानकों को पूरा कर लिया है कि नहीं या फिर कुछ अन्य लोगों (जो बहुत विशेषज्ञ न हों) को नियुक्त कर दिया जाए और वो आसानी से देख सकें कि मानकों के अनुसार ही उत्पादन हो रहा है कि नहीं। इस तरह उत्पादन की अपनी एक पूरी ब्यूरोक्रेसी भी विकसित हुई। एक बहुत ही खास बात इस पूरे घटनाक्रम में हुई। इस बात पर हमें गौर करना चाहिए। आप यहाँ कारीगर की स्थिति को देखिए। यहाँ अब कारीगर निर्माण की प्रक्रिया और निर्माण-मानकों को तय नहीं करता। उसकी इन सबको विकसित करने, इनको तय करने में कोई भूमिका नहीं है क्योंकि वो इतना हुनरमन्द और ज्ञानवान है ही नहीं। यह सब तो अब कोई और तय करता है। इस पूरी प्रक्रिया में बौद्धिक श्रम और शारीरिक श्रम का विभाजन भी हो गया।

4. अब सवाल यह है कि क्या शिक्षा में भी हम सभी प्रक्रियाओं को मुनाफे को केन्द्र में रखकर तय करते हैं? शिक्षा में यह सम्भव है क्या कि कम हुनरमन्द और कम काबिल लोग शिक्षा दे सकें? क्या शिक्षा में यह सम्भव है कि हम इसकी प्रक्रियाओं को छोटे-छोटे हिस्सों में तोड़ दें? और क्या यह सम्भव है कि हर हिस्से के मानक तय कर दें और उनके मैन्युअल बना दें? क्या यह सम्भव है कि शिक्षक के लिए बौद्धिक श्रम कोई और करे और वे केवल शारीरिक श्रम करें? हम ऐसे किसी व्यक्ति को शिक्षक कहेंगे भी क्या?

5. इसलिए मेरा मानना यह है कि जब हम कहते हैं 'क्वालिटी एजुकेशन', 'गुणवत्तापूर्ण शिक्षा', 'शिक्षा में क्वालिटी एश्योरेंस', 'क्वालिटी ऑफ़ एजुकेशन', 'शिक्षा की गुणवत्ता' आदि; ये सब मुझे अटपटा और अजीब लगता है। यहाँ 'क्वालिटी' या 'गुणवत्ता' शब्द जोड़ते ही आप उसका गलत प्रयोग कर रहे होते हैं। ये शब्द अपने साथ उद्योग जगत से एक बहुत सीमित अर्थ लेकर आते हैं और इसकी तरफ हमारा ध्यान ही नहीं जाता। दरअसल मुझे तो यह भी लगता है कि हमें यह भी सोचना चाहिए कि शिक्षा के 'अच्छेपन' या इसके आकलन की कसौटी को क्या यह 'क्वालिटी' शब्द प्रेषित कर भी सकता है ? क्योंकि 'क्वालिटी' शब्द वास्तव में 'अच्छेपन' के तत्वों को प्रेषित करने के लिए गढ़ा ही नहीं गया है। जैसा हमने ऊपर देखा भी है। यह शब्द तो केवल कुछ तय मानकों को प्राप्त करने को इंगित करता है। और ये मानक भी मुनाफ़ा कमाने के सरोकार के चलते कुछ इस तरह गढ़े जाते हैं ताकि उस न्यूनतम अवस्था (उच्चतम नहीं) को प्राप्त किया जा सके जहाँ उत्पाद बेचने योग्य बन सके और एक समय सीमा तक अपना फंक्शन कर सके। हमें सोचना यह चाहिए कि क्या हमें इस 'क्वालिटी' शब्द की ज़रूरत है? हम यह कहने की बजाए कि 'क्वालिटी एजुकेशन' के मायने क्या हैं, क्या यह नहीं पूछ सकते कि 'अच्छी शिक्षा' के मायने क्या हैं? यह कहने की बजाए कि हमें क्वालिटी एजुकेशन चाहिए; क्या हम यह नहीं कह सकते कि हमें 'अच्छी शिक्षा' चाहिए?
6. सवाल यह भी उठता है कि क्या शिक्षा में कुछ ऐसे मानक गढ़े भी जा सकते हैं क्या जो सर्वव्यापी, सर्वकालिक और सर्वमान्य हों?

तौसीफ़ : हम्म, मैंने इन पक्षों पर पहले नहीं सोचा था। आपसे बात करना एक कमाल का अनुभव होता है। (हँसते हुए)

(दोनों हँसते हुए उठते हैं और चाय के पैसे देकर वापस घर की ओर चल पड़ते हैं।)

तौसीफ़ : चलिए ठीक है माना कि 'क्वालिटी' शब्द अपने साथ एक बहुत संकुचित और तकनीकी अर्थ लेकर आता है। यह भी माना कि उद्योगों में क्वालिटी 'उत्कृष्टता' को प्राप्त करना नहीं है क्योंकि यदि ऐसा होता तो उसको बनाने में लगने वाली लागत बहुत बढ़ जाएगी और इस तरह मुनाफ़ा कमाना मुश्किल हो जाएगा। इस तरह यह बात उचित ही लगती है कि उद्योगों में क्वालिटी के मानकों को कहीं न कहीं मुनाफ़ा कमाने का भाव भी तय कर रहा होता है। और भी कई बातें जैसे श्रम का विभाजन आदि भी सही ही लगती हैं। चलिए एक बार के लिए यह भी माना कि हमें इस 'क्वालिटी' शब्द को ही छोड़ देना चाहिए और 'गुणवत्तापूर्ण शिक्षा' या 'क्वालिटी एजुकेशन' कहने की बजाए 'अच्छी शिक्षा' का इस्तेमाल करना चाहिए। लेकिन कहीं न कहीं हमें 'अच्छी शिक्षा' के भी तो कोई मानक कल्पित करने ही होंगे न, या नहीं?

रामस्वरूपजी : बिलकुल भाई, आप ठीक कह रहे हैं, यह तो करना ही होगा।

तौसीफ़ : तो फिर सवाल यह उठता है कि आखिर वो मानक होंगे क्या?

रामस्वरूपजी : देखो भाई तौसीफ़, अब आपने इस पूरे मामले की नब्ज़ पर हाथ रख दिया है। मुझे लगता है कि यह एक संवेदनशील मामला है, इसलिए इस पर थोड़ा संज़ीदगी से सोचना होगा।

तौसीफ़ : सही बात है। मैं आपकी चिन्ता समझ सकता हूँ। मैं चूँकि एक इंजीनियर हूँ तो शायद एक शिक्षक या शिक्षाविद की तरह तो नहीं सोच सकता लेकिन फिर भी आपसे अपने कुछ विचार और अनुभव साझा करता हूँ। अभी कुछ दिन पहले की बात है। मेरे व्हाट्स-एप पर एक मैसेज आया जिसमें मशहूर गुजराती शिक्षक गिजुभाई की किताब के कुछ अंश दिए गए थे। मैं चाहूँगा कि आप उसे पढ़ें।

(तौसीफ़ अपने फोन पर वह मैसेज खोलते हैं और अपना फोन रामस्वरूप जी को पढ़ने के लिए देते हैं। रामस्वरूप जी रुककर उस मैसेज को पढ़ते हुए...)

तौसीफ़ : मुझे लगता है कि यह एक शानदार उदाहरण है एक शिक्षा के अच्छेपन के मानदण्डों का। अपने स्कूल के और उसमें में दी जानी वाली शिक्षा के अच्छेपन के क्या मानदण्ड होंगे,

मेरी शाला में नहीं चलेगा गिजुभाई

- मेरी शाला में शिक्षाशास्त्र की किताबों वाला विशाल पुस्तकालय नहीं होगा तो चलेगा, पर माँग–ताँग कर भी शिक्षा की पुस्तकों में से अगर कुछ न पढ़ा गया होगा तो यह नहीं चलेगा।
- मेरी शाला का भवन आलीशान पत्थरों का बना और पक्का फर्श नहीं होगा तो चलेगा, पर उसके आँगन में अगर गड्ढे पड़े हुए होंगे या वह चूने–माटी के पलस्तर से रहित होगा तो यह नहीं चलेगा।
- मेरी शाला की दीवारें रंग से पुती हुई खूबसूरत न होंगी तो चलेगा, पर अगर उन पर मकड़ी का एक भी जाला होगा या धूल चढ़ी हुई होगी तो यह नहीं चलेगा।
- मेरी शाला में सुन्दर दरी या गलीचे बिछे हुए नहीं होंगे तो चलेगा, पर अगर कहीं भी धूल-कचरा होगा और वह हमारे पैरों में आ रहा होगा तो यह नहीं चलेगा।
- मेरी शाला में शिक्षण सम्बन्धी थोक–बन्द उपकरण न हों तो चलेगा, पर मेरी शाला में भले ही थोड़े उपकरण क्यों न हों, अगर उनका सचमुच में उपयोग न होता होगा तो यह नहीं चलेगा।
- मेरी शाला में बड़ा–सा बाल–पुस्तकालय न हो तो चलेगा, पर भले ही हस्तलिखित क्यों न हो, बालकों द्वारा उल्लास–उमंग के साथ पठनीय पुस्तकें अगर नहीं होंगी तो यह नहीं चलेगा।
- मेरी शाला में मैं बहुत पढ़ा–लिखा पण्डित न होऊँ तो यह चलेगा, पर अगर मैं बालकों के प्रति सम्मान–भाव रखने वाला, उनके विकास का अर्थ समझकर उन्हें वातावरण प्रदान करने वाला न होऊँ तो यह नहीं चलेगा।
- मेरी शाला में मैं बालकों को पढ़ाने या प्रतिपल उन्हे ज्ञानी बनाने के लिए न दौड़ूँ तो यह चलेगा, लेकिन अगर मैं उनके काम में बाधक बनूँ, उनको बार–बार डरा–धमका कर पढ़ाने बिठाऊँ तो यह नहीं चलेगा।
- मेरी शाला में बालक दो पल पढ़ेंगे और दो पल खेलेंगे तो यह चलेगा, परन्तु अगर बालक कारखाने के मजदूरों की तरह दिन-भर काम करते ही रहें और मैं उनके ऊपर सख्त नज़रें रखे रहूँ तो यह नहीं चलेगा।
- मेरी शाला में बालक मेरे गले न पड़ते हों या मेरे दोस्त बन कर मेरे आगे–आगे न चलते हों तो यह चलेगा, पर अगर वे मुझसे दूर-दूर भागते हों और मुझे देख कर डरते हों तो यह नहीं चलेगा।
- मेरी शाला में बालक कम पढ़ेंगे तो चलेगा, धीमे–धीमे पढ़ेंगे तो चलेगा परन्तु अगर चीख–चीख कर, जोर–जोर से पढ़ते हुए उकता जाएँगे या निस्तेज हो जाएँगे तो यह नहीं चलेगा।
- मेरी शाला में बालक मर्जी–मुताबिक बैठें, इच्छा हो तो पढ़ें या चित्र बनाएँ तो यह चलेगा लेकिन किसी के आने पर दिखावे के लिए ही अगर वे लिखेंगे या चित्र बनाएँगे तो नहीं चलेगा।
- मेरी शाला में बालक अगर समय पर काम पूरा न हो सका तो शान्ति से मुझे आकर मना कर देंगे अथवा अगर धीमी गति से काम करेंगे तब भी चलेगा, पर कदाचित् मैं मारूँगा या डाँटूगा तभी दौड़-दौड़ कर काम करेंगे तो यह नहीं चलेगा।

–गिजुभाई की पुस्तक *'शिक्षक हों तो'* से

गिजुभाई ने उनका एक ख़ाका यहाँ एक सरल और प्रभावी भाषा में खींचा है। उन्होंने ऐसी कुछ बातें पहचान ली हैं जिन पर कोई समझौता नहीं होगा। शिक्षा के अच्छेपन के उन्होंने ऐसे कुछ प्रतिमान पहचान लिए हैं जिन पर कोई कोताही नहीं बरती जाएगी। ये सब वो बातें हैं जो उनके स्कूल को और उसमें दी जाने वाली शिक्षा को अच्छा बनाती हैं, बेहतरीन बनाती हैं। (बातें करते-करते कब रामस्वरूप जी का घर आ गया पता ही नहीं चला। रामस्वरूप जी ने तौसीफ़ को अपने घर में आने को कहा ताकि बात को किसी निष्कर्ष पर लाकर ख़त्म किया जा सके। रामस्वरूप जी तौसीफ़ को अपने घर की बैठक में लेकर गए और वहाँ बैठ कर आगे की बातें करने लगे।)

रामस्वरूपजी : हाँ, तौसीफ़, तो...बिलकुल सही बात है आपकी। मुझे इसमें कोई शक नहीं कि गिजुभाई यहाँ शिक्षा के अच्छेपन के मानदण्डों पर अपना एक ख़ाका सुझा रहे हैं। जैसे आपको उनकी कई बातें अच्छी लगीं, वैसे ही मुझे भी उनकी एक बात अच्छी लगी वो यह कि गिजुभाई यहाँ एक दम साफ़-साफ़ शब्दों में अपनी बात कह रहे हैं। उन्होंने अपने मानदण्डों को ऐसी भाषा में कहा कि वे सब के सब हमारे सामने कुछ मूर्त बिन्दुओं के रूप में उभरते हैं। अब कोई भी आकर देख सकता है कि वैसा हो रहा है कि नहीं। उन्होंने कोशिश की है कि हर मानदण्ड को इस कदर मूर्त रूप दिया जाए ताकि हर कोई उन्हें जहाँ तक सम्भव हो व्यवहार में उतरते हुए देख सके, महसूस कर सके, उनका अवलोकन कर सके।

दूसरी बात जो मुझे अच्छी लगी वो यह कि गिजुभाई यहाँ अपने विवेक से शिक्षा के अच्छेपन की एक धारणा बनाते हैं और उस पर कायम हैं। मुझे पता है कि उनके पास पर्याप्त तर्क भी हैं कि वे ऐसी धारणा ही क्यों बना रहे हैं। तो मुझे उनका यह पक्ष भी अच्छा लगा- अपने विवेक से एक धारणा बनाना और फिर उसके पक्ष में तर्क गढ़ना कि यह धारणा क्यों उचित है।

तौसीफ़ : हम्म, आपने बिलकुल सही कहा। तो अब हम कह सकते हैं कि अच्छी शिक्षा के क्या

मानदण्ड हो सकते हैं। उसका एक ख़ाका हमें मिल गया है। अब अगर मैं अशरफ के लिए कोई स्कूल ढूँढ़ता हूँ तो पहले मैं इन तीन-चार चीज़ों का अवलोकन करूँगा:

शिक्षक और बच्चों के बीच रिश्ते : जैसे क्या वहाँ बच्चों का सम्मान होता है?; क्या वहाँ खुला, डर और दबाव रहित माहौल है?; शिक्षक और बच्चों के व्यवहार में ईमानदारी है क्या?

सीखने-सिखाने के तरीके : मसलन बच्चों को सीखने की अपनी गति की आज़ादी है क्या? उन्हें अपनी बात और सृजनात्मकता को ज़ाहिर करने की आज़ादी है क्या?

पढ़ने-पढ़ाने के साधन और सामग्री : उदाहरण के लिए क्या वहाँ बच्चों को उपकरणों के उपयोग की आज़ादी है? क्या वहाँ बच्चों के लिए उचित पाठ्य सामग्री की उपलब्धता है? आदि।

स्कूल के भवन की स्थिति और माहौल : जैसे क्या वहाँ साफ़-सफाई पर ध्यान दिया गया है? आदि। ये सब वो बातें हैं जो ऊपर गिजुभाई ने कही हैं। अगर मैंने पाया कि ये चीज़े वहाँ उस स्कूल में हैं तो मैं मानूँगा कि वह एक अच्छा स्कूल है जो मेरे बेटे को अच्छी शिक्षा दे सकता है। क्यों?

रामस्वरूपजी : देखो भाई तौसीफ़, मैं आपका दिल तोड़ना नहीं चाहता लेकिन मुझे अब एक सवाल पूछना ही पड़ेगा।

तौसीफ़ : कैसा सवाल? पूछिए

रामस्वरूपजी : सवाल अब मैं आपकी भाषा में ही पूछता हूँ। आपने खुद शुरुआत में 'टोटल क्वालिटी एश्योरेंस' की बात की थी। जिसका अर्थ है कि उद्योग जगत में किसी उत्पाद की गुणवत्ता के हर पक्ष पर समान ध्यान दिया जाता है और तब जाकर कहीं उसकी गुणवत्ता को एक परिपूर्णता में सुनिश्चित किया जाता है। कहने का अर्थ है कि गुणवत्ता को वहाँ एक पूर्णता में देखा जाता है। क्यों?

तौसीफ़ : बिलकुल ठीक कहा आपने।

रामस्वरूपजी : तो फिर तौसीफ़ भाई, हमें शिक्षा के अच्छेपन के मानदण्डों को भी पूर्णता में ही देखना होगा। कम से कम ऐसी कोशिश तो करनी ही होगी।

तौसीफ़ : तो क्या आपको लग रहा है कि गिजुभाई के ऊपर दिए गए उदाहरण में शिक्षा के अच्छेपन को पूर्णता में नहीं देखा गया है; शायद कुछ छूट गया है जो इस खाके में अभी नहीं आया?

रामस्वरूपजी : हाँ, शायद मै ऐसा ही कुछ कहने की कोशिश कर रहा हूँ। और शायद इसके अलावा भी कुछ कहना चाहता हूँ :

पहली बात तो मैं यह स्पष्ट कर दूँ कि शिक्षा के अच्छेपन के मानदण्ड कोई बँधे-बँधाए नहीं हैं क्योंकि शिक्षा को देखने-समझने के लोगों के भिन्न-भिन्न नज़रिए और विचार हैं। इन दृष्टिकोणों, नज़रियों के आलोक में ही अच्छेपन के मानदण्ड क्या होंगे, यह तय होता है और फिर उनकी व्याख्या, पुनर्व्याख्या होती है। इसलिए ऊपर के उदाहरण में एक बहुत ही ख़ास मानदण्ड जो छूट गया है वो है - शिक्षा को देखने का नज़रिया - उसके मायने, आदर्श, मूल्य।

तौसीफ़ : यह मैं समझा नहीं।

रामस्वरूपजी : अच्छा आप एक बात बताओ क्या आप अपने बेटे को किसी ऐसे स्कूल में भरती करवाना चाहोगे जो यह दावा करता हो कि हम बच्चों को प्रतिस्पर्धी बनाएँगे?

तौसीफ़ : हम्म ये थोड़ा मुश्किल सवाल है लेकिन मुझे लगता है कि प्रतिस्पर्धी होना आख़िरकार कोई बहुत काम की चीज़ तो है नहीं। प्रतिस्पर्धी लोग अपने आप से और दूसरों से लगातार लड़ते रहते हैं, आगे बढ़ने के लिए जूझते रहते हैं। शायद विवेकहीन प्रतिस्पर्धा कोई बहुत काम की चीज़ तो है नहीं। आप बेवज़ह अपने आप से और दूसरों से अलग हो जाते हैं।

रामस्वरूपजी : तो आपका उत्तर 'न' है क्योंकि आपको लगता है कि 'प्रतिस्पर्धा' शिक्षा का एक अच्छा आदर्श नहीं है। किसी शिक्षा को अपने लिए ऐसे आदर्श नहीं चुनने चाहिए। आपको लग सकता है कि शिक्षा के आदर्श और मूल्य तो कुछ और होने चाहिए, नहीं?

तौसीफ़ : हाँ बिलकुल। ओह! अब मैं समझा। इसका अर्थ यह है कि शिक्षा के अच्छेपन का एक मानदण्ड शिक्षा के आदर्श और मूल्य भी है। वाह रामस्वरूप जी, क्या बात है। मैं ये ज़रूर जानना चाहूँगा कि आखिर कोई स्कूल शिक्षा को

देखता कैसे है? उसके क्या आदर्श और मूल्य वो अपने लिए तय करता है? लेकिन यह मुझे पता कैसे चलेगा कि उस स्कूल ने शिक्षा के आदर्श और मूल्य अपने लिए क्या तय किए हैं?

रामस्वरूपजी : वहाँ के शिक्षकों और प्रधानाचार्य से बात करके। उनके विभिन्न डाक्यूमेंट पढ़ कर। और भी कई ज़रिए हैं, उन पर अभी थोड़ी देर में बात करते हैं।

दूसरी बात यह है तौसीफ़ कि शिक्षा के आदर्श और मूल्य दरअसल एक मूलभूत मानदण्ड है शिक्षा के अच्छेपन का। क्यों? क्योंकि ये आदर्श और मूल्य ही यह तय करते हैं कि अन्य मानदण्ड क्या होंगे और कैसे होंगे? इसे एक उदाहरण से समझते हैं। अब आपके सामने मैं गिजुभाई का एक मानदण्ड रखता हूँ :

"मेरी शाला में बालक दो पल पढ़ेंगे और दो पल खेलेंगे तो यह चलेगा, परन्तु अगर बालक कारखाने के मज़दूरों की तरह दिनभर काम करते ही रहें और मैं उनके ऊपर सख्त नज़रें रखे रहूँ तो यह नहीं चलेगा।"

आप ज़रा सोच कर बताओ कि उन्होंने यह मानदण्ड अपने स्कूल के लिए क्यों गढ़ा होगा?

तौसीफ़ : मुझे लगता है कि गिजुभाई के मन में कहीं न कहीं यह बात रही होगी कि उनके बच्चे ऐसे किसी दबाव में न रहें कि मानो उन पर कोई नज़र रख रहा है। बच्चे शायद उनकी नज़र में कोई बंधुआ मज़दूर नहीं है जिन्हें हर वक्त दिशानिर्देश और कड़ी नज़र की आवश्यकता है। शायद उनका मानना यह हो कि बच्चे खुद अपने मूड और रुचि से तय करें कि कब क्या करना है? वे शायद उन्हें ख़ुद-मुख्तार बनने की ओर ले जाना चाहते थे।

रामस्वरूपजी : बहुत अच्छा तौसीफ़ भाई। यहाँ गिजुभाई के लिए शिक्षा का उद्देश्य (आदर्श) क्योंकि बच्चों को ख़ुद-मुख्तार बनाना है इसलिए उन्होंने बच्चों और उनके बीच के रिश्तों और उनकी शिक्षण प्रक्रियाओं को इस तरह कल्पित किया। अगर उनका आदर्श कुछ और होता तो ये रिश्ते और शिक्षण प्रक्रियाएँ भी कुछ और होतीं।

तौसीफ़ : बहुत बढ़िया... अब मैं समझा... एक बात तो यह कि शिक्षा के हम जो भी उद्देश्य तय करते हैं, उनको प्राप्त करने के लिए हमें उनके मुताबिक ही बच्चों के साथ रिश्ते, उन्हें सीखने-सिखाने की विषय-वस्तु और प्रक्रियाएँ तय करनी होंगी। दूसरा यह कि अब मैं किसी स्कूल में बच्चों के साथ शिक्षकों के कैसे रिश्ते हैं, उन्हें क्या और कैसे सिखाया जा रहा है आदि चीज़ों को देखकर भी अन्दाज़ा लगा सकता हूँ कि आख़िर वहाँ शिक्षा के किन आदर्श और मूल्यों को चुना गया है?

रामस्वरूपजी : एकदम सही बोला आपने। तो अगर देखें तौसीफ़ तो कम से कम शिक्षा के अच्छेपन को पूर्णता से देखने के कुछ ये आयाम या दायरे हो सकते हैं :

1. शिक्षा के उद्देश्य (आदर्श, मूल्य), 2. शैक्षिक परिणाम और 3. शैक्षिक प्रक्रियाएँ

चलो एक उदाहरण से इन्हें समझते हैं। फ़र्ज़ करो कि तुम्हें अपने बेटे लिए कोई अच्छी शिक्षा देने वाला स्कूल चुनना हो तो तुम इस तालिका में क्या मानदण्ड रखना चाहोगे?

क्र. सं.	शिक्षा के अच्छेपन के दायरे	अच्छेपन के दायरों के अन्दर मानदण्ड (उदाहरण)
01.	शिक्षा के आदर्श व मूल्य	
02.	शैक्षिक परिणाम	
03.	शैक्षिक प्रक्रियाएँ	

तौसीफ़ : आपको भी मेरी थोड़ी मदद करनी होगी। दूसरी बात यह कि इस तालिका को मैं ऐसे नहीं बनाना चाहूँगा। क्योंकि अभी तक की बातचीत से मैं यह समझा हूँ कि ये चीज़ें एक दूसरे को निर्धारित करते हैं तो मैं वैसा ही कुछ ढाँचा बनाना चाहूँगा, जैसे कि ये :

शिक्षा के अच्छेपन के दायरे →	शिक्षा के आदर्श व मूल्य →	शैक्षिक परिणाम →	शैक्षिक प्रक्रियाएँ

यहाँ ये तीर इस बात को दिखाते हैं कि ये दायरे एक दूसरे को तय कर रहे हैं। अब मैं सबसे पहले यह बताता हूँ कि मेरे बेटे के लिए मैं किस तरह की शिक्षा की कल्पना करता हूँ। मतलब यह कि मैं शिक्षा के क्या आदर्श और मूल्य उचित समझता हूँ? मेरा मानना है कि मेरा बेटा एक ऐसी शिक्षा पाए ताकि वो बड़ा होकर एक बेहतरीन आदमी बने। धर्म और जाति, या पैसे के नाम पर, या उसके रुतबे के आधार पर लोगों से रिश्ते न बनाए, बल्कि सबको एक समान समझे, लोगों की मदद करें, अच्छे को अच्छा, बुरे को बुरा कह सकने की उसमें हिम्मत हो, वो आत्मनिर्भर बने, किसी का मोहताज़ न हो, वो ख़ुशी ढूँढ़े अपने लिए, दूसरों के लिए; ज़िन्दगी को जिए, किसी के भी बहकावे में न आ जाए, अपनी समझ और होशियारी से तय करे कि क्या सही है, क्या गलत।

रामस्वरूपजी : बहुत बढ़िया, तौसीफ़ भाई। तो हम कह सकते हैं कि आप के मन में शिक्षा के आदर्श और मूल्य कुछ इस तरह के हैं: समानता, न्याय, संवेदनशीलता, विवेकशीलता, आर्थिक आत्मनिर्भरता, सामाजिक सरोकार आदि।

तौसीफ़ : बिलकुल सही कहा आपने। अब हम यह इस तालिका में लिख सकते हैं:

शिक्षा के अच्छेपन के दायरे →	शिक्षा के आदर्श व मूल्य →	शैक्षिक परिणाम →	शैक्षिक प्रक्रियाएँ
	समानता, न्याय, संवेदनशीलता, विवेकशीलता, आर्थिक आत्मनिर्भरता, सामाजिक सरोकार		

अब यदि हम शिक्षा के ये आदर्श और मूल्य तय करते हैं तो अब हमें सोचना होगा कि कौन से ज्ञान, मूल्य, रुझान, हुनर, क्षमताएँ और रुचियाँ उसमें विकसित करनी होंगी और किस हद तक करनी होंगी ताकि जब वो इस इस तरह की शिक्षा को पूरा कर ले तो हमारे पास कुछ मानदण्ड हों जिनकी रोशनी में यह देखा जा सके कि मेरे बेटे ने वो सब हासिल किया है कि नहीं?

i. **सीखने की व्यापकता** : यदि मैं चाहता हूँ कि मेरा बेटा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर, विवेकशील, न्यायप्रिय, संवेदनशील बने तो उसके लिए ज़रूरी है कि वह बहुत व्यापक स्तर पर सीखे। उसे ज्ञान के हर क्षेत्र में कुछ बुनियादी समझ बनाने का मौका मिले ताकि आगे चलकर उसमें उत्तरोत्तर समझ विकसित करने की कुछ बुनियादी तैयारी हो सके। विज्ञान, समाज विज्ञान, संगीत, कला, तर्क, इतिहास, खेल-कूद आदि सभी क्षेत्रों में यदि वह कुछ बुनियादी समझ बना पाता है तो उसे जीवन के हर पहलू पर निर्णय लेने और जीवन को बेहतर तरीके से जीने में शायद मदद मिलेगी। उसे इन क्षेत्रों के सिद्धान्त, सूचनाएँ, संकल्पनाएँ सीखने होंगे।

ii. **सीखने में स्पष्टता व गहराई** : और यह सब सीखना कोई जल्दबाजी का या छिछला नहीं होगा। हर चीज़ उसे समझ कर और गहराई से सीखनी होगी। आखिर किसी बात का अर्थ क्या है? संकल्पनाओं की समझ हो, सिद्धान्तों के आपस में क्या सम्बन्ध हैं यह पता हो; उनका जीवन से क्या जुड़ाव है, यह समझ हो; उनसे जीवन में किस तरह के निर्णय या काम लिए जा सकते हैं, यह समझ हो; इन सिद्धान्तों में क्या खामियाँ हैं, उनकी क्या आलोचना है, यह जागरूकता हो। तब कहीं जाकर सीखने का जीवन में कोई लाभ है।

iii. **स्वयं सीखने और जानने की क़ाबिलीयत** : केवल ये सब संकल्पनाएँ, सूचनाएँ, नियम, कानून, सिद्धान्त सीखना शायद काफी नहीं होगा। बल्कि उसे यह भी सिखाना होगा कि वह आगे चल कर खुद यह सब कैसे कर सकता है। ताकि वह कुछ भी सीखने के

लिए हमेशा किसी का मुँह नहीं ताकता रहे। स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी कोई जीवन भर थोड़े साथ होते हैं। कामकाजी जीवन में, रोज़मर्रा के जीवन में रोज़ नई चीज़ें और चुनौतियाँ आती हैं। उन सबको हल करना हो तो लगातार खुद सीखते रहने की ज़रूरत है।

iv. **सीखने के प्रति नज़रिया** : इसलिए सीखने के प्रति एक खास नज़रिया मेरे बेटे को अपने व्यक्तित्व में विकसित करना होगा। उसे अपने ज्ञान और उसकी सीमाओं के प्रति ईमानदारी से सोचना आना चाहिए, ईमानदारी से ज्ञान निर्माण की प्रक्रियाओं को पूरा करना आना चाहिए, खुद पर विश्वास होना चाहिए, सीखने की ललक होनी चाहिए, ज्ञान के प्रति एक सम्मान और इज्ज़त होनी चाहिए।

v. **संवेदनशीलता और मूल्य** : दूसरों के प्रति सम्मान, आत्मसम्मान, सहयोग का भाव, न्याय का भाव जैसे मूल्य उसमें हों।

शिक्षा के अच्छेपन के दायरे →	शिक्षा के आदर्श व मूल्य →	शैक्षिक परिणाम →	शैक्षिक प्रक्रियाएँ
	समानता, न्याय, संवेदनशीलता, विवेकशीलता, आर्थिक आत्मनिर्भरता, सामाजिक सरोकार	i. सीखने की व्यापकता : उसे ज्ञान के हर क्षेत्र में समझ बनाने का मौका मिलें। इन क्षेत्रों के सिद्धान्त, सूचनाएँ, संकल्पनाएँ सीखने होंगे। ii. सीखने में स्पष्टता व गहराई: आखिर किसी बात का अर्थ क्या है? संकल्पनाओं की समझ हो, सिद्धान्तों के आपस में क्या सम्बन्ध है यह पता हो; उनका जीवन से क्या जुड़ाव है? iii. स्वयं सीखने और जानने की क़ाबिलीयत : रोज़मर्रा के जीवन में चुनौतियाँ को हल करना; सीखे गए सिद्धान्तों को जीवन में उपयोग करना, लगातार खुद सीखते रहना। iv. सीखने के प्रति नज़रिया : ईमानदारी से ज्ञान निर्माण की प्रक्रियाओं को पूरा करना आना चाहिए; खुद पर विश्वास होना चाहिए; सीखने की ललक होनी चाहिए; ज्ञान के प्रति एक सम्मान और इज्ज़त। v. संवेदनशीलता और मूल्य : दूसरों के प्रति सम्मान, आत्मसम्मान, सहयोग का भाव, न्याय का भाव जैसे मूल्य हों।	

रामस्वरूपजी : बहुत खूब तौसीफ़, आपने बहुत ही गहराई से इस पर अपने विचार दिए हैं. अब हम इसको थोड़ा संक्षिप्त रूप में इस तालिका में रख देते हैं:

तौसीफ़ : जी हाँ, तो अब बचता है अन्तिम बिन्दु, कि यदि ये आदर्श-मूल्य हैं और ये परिणाम हम पाना चाहते हैं तो फिर शैक्षिक प्रक्रियाएँ क्या होंगी? मैं जितना समझा हूँ वो यह है कि प्रक्रियाओं का रूप भी हमें वैसा ही रखना होगा जैसे कि हमारे उद्देश्य हैं। यदि संवेदनशील, विवेकशील, आत्मनिर्भर जैसा कोई व्यक्ति बनाना हमारा उद्देश्य है तो यह सब किसी ऐसी जगह तो नहीं हो सकता जहाँ बच्चों को डराया, धमकाया जाता हो; न ही ऐसे माहौल में हो सकता जहाँ कुछ भी खुद करने, सोचने, विचारने को मौका न हो। इसलिए मैं चाहूँगा कि निम्न प्रक्रियाओं को यदि अपनाया जाए तो शायद काम बने :

i. **बेहतरीन शिक्षण का सामर्थ्य** : यदि हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे एक व्यापक स्तर पर सीखें और समझें तो ऐसा तभी सम्भव है जबकि उनके शिक्षक भी एक व्यापक ज्ञान रखते हों और लगातार सीखने को महत्त्व देते हों; और खुद भी लगातार सीखते हों।

ii. **नैतिक उपयुक्तता** : शिक्षण प्रक्रियाएँ ऐसी हों जो नैतिक रूप से उचित हों, न्यायपूर्ण हों। बच्चों के स्तर के मुताबिक उनकी मदद करना; डर, दण्ड का इस्तेमाल नहीं करना; पक्षपात नहीं; किसी बच्चे को नीचा नहीं दिखाना, आदि।

iii. **बच्चों के साथ रिश्ते** : उनका ख्याल रखना, उनसे समान रिश्ते होना, बच्चों के लिए शिक्षण का रुचिकर होना ताकि वे सीखने से जुड़ सकें।

iv. **कम ख़र्चीली होना** : शिक्षण प्रक्रियाएँ ऐसी हो जो सस्ती हों। वे न केवल आर्थिक रूप से सस्ती हों बल्कि, समय और ऊर्जा की खपत भी उनमें कम लगे। ताकि बच्चों और शिक्षकों दोनों के समय और ऊर्जा की बचत हो।

शिक्षा के अच्छेपन के दायरे →	शिक्षा के आदर्श व मूल्य →	शैक्षिक परिणाम →	शैक्षिक प्रक्रियाएँ
		i. सीखने की व्यापकता : उसे ज्ञान के हर क्षेत्र में समझ बनाने का मौका मिलें। इन क्षेत्रों के सिद्धान्त, सूचनाएँ, संकल्पनाएँ सीखने होंगे। ii. सीखने में स्पष्टता व गहराई : आखिर किसी बात का अर्थ क्या है? संकल्पनाओं की समझ हो, सिद्धान्तों के आपस में क्या सम्बन्ध है यह पता हो; उनका जीवन से क्या जुड़ाव है? iii. स्वयं सीखने और जानने की क़ाबिलियत: रोजमर्रा के जीवन में चुनौतियाँ को हल करना; सीखे गए सिद्धान्तों को जीवन में उपयोग करना, लगातार खुद सीखते रहना। iv. सीखने के प्रति नज़रिया : ईमानदारी से ज्ञान निर्माण की प्रक्रियाओं को पूरा करना आना चाहिए; खुद पर विश्वास होना चाहिए; सीखने के ललक होनी चाहिए; ज्ञान के प्रति एक सम्मान और इज्ज़त। v. संवेदनशीलता और मूल्य : दूसरों के प्रति सम्मान, आत्मसम्मान, सहयोग का भाव, न्याय का भाव जैसे मूल्य हो।	i. बेहतरीन शिक्षण का सामर्थ्य : शिक्षक भी एक व्यापक ज्ञान रखते हों। और लगातार सीखने को महत्व देते हो; लगातार सीखते हो खुद। ii. नैतिक उपयुक्तता: बच्चों के स्तर के मुताबिक उनकी मदद करना; डर, दंड का इस्तेमाल नहीं करना; पक्षपात नहीं; किसी बच्चे को नीचा नहीं दिखाना, आदि. iii. बच्चों के साथ रिश्ते : उनका ख्याल रखना, उनसे सामान रिश्ते होना, बच्चों के लिए शिक्षण का रुचिकर होना। iv. कम ख़र्चीली होना : न केवल आर्थिक रूप से सस्ती हो बल्कि, समय और ऊर्जा की खपत भी उनमें कम लगे।

रामस्वरूपजी : बहुत सुन्दर तौसीफ़, आपने कमाल कर दिया। अब हम इन बिन्दुओं को भी तालिका में रख देते हैं:

अब देखो तौसीफ़ यह तालिका बन कर तैयार हो गई। अब यह तुम्हारे बेटे के लिए अच्छी शिक्षा के एक फ्रेमवर्क की तरह है। यह अब तुम्हें बताएगी कि कौन-सी शिक्षा अच्छी शिक्षा है और कौन-सा स्कूल अच्छा स्कूल है?

तौसीफ़ : वाह! रामस्वरूप जी। अब मैं समझा एक अच्छी शिक्षा का मतलब। और न केवल मतलब बल्कि उसके क्या मानदण्ड होंगे यह भी। अब शायद मैं किसी भी स्कूल का एक बेहतर आकलन कर सकता हूँ और समझ सकता हूँ कि अच्छेपन के पैमाने पर वह कहाँ ठहरता है। धन्यवाद, आपके वक्त के लिए। अब विदा लेता हूँ। फिर मिलेंगे।

रामस्वरूपजी : बिलकुल तौसीफ़ भाई। ज़रूर मिलेंगे। नमस्कार।

(तौसीफ़ रामस्वरूप जी से विदा लेकर बाहर सड़क पर आते हैं और अपने घर की ओर चल देते हैं। चलते-चलते उन्होंने देखा कि कुछ लोग एक बड़े से बोर्ड पर किसी स्कूल का इश्तहार चिपका रहे हैं। तौसीफ़ की नज़र उस पर पड़ती है। इश्तहार में लिखा है, "हमारा स्कूल विश्व-स्तरीय क्वालिटी शिक्षा प्रदान करता है।" फिर एक कोने में तौसीफ़ की नज़र पड़ी जहाँ लिखा था, "आइए और खुद देखिए हमारे स्कूल की क्वालिटी: स्विमिंग पूल, हॉर्स राइडिंग, एयर कंडीशण्ड कक्षा-कक्ष, अंग्रेजी माध्यम, अमेरिकन कंपनी द्वारा तैयार माइण्ड एक्टिविटीज़।" यह सब पढ़कर तौसीफ़ के दिमाग में आज हुई सारी बातें एक दम से फिर घूम गई। और एक मुस्कान के साथ वे मन ही मन बुदबुदाए- "गुणवत्ता के सौदागर"

सन्दर्भ

यह लेख मौटे तौर पर दो लोगों के विचारों पर आधारित है- रोहित धनकर और डब्लू. ए. हार्ट के लेख 'दि आईडिया ऑफ़ क्वालिटी इन एजुकेशन' (2011, अप्रकाशित) और डब्लू. ए. हार्ट के लेख 'दि क्वालिटी मोंगेर्स' (*जर्नल ऑफ़ फिलोसोफी ऑफ़ एजुकेशन*, वॉल्यूम 31, नंबर 2, 1997) में प्रस्तुत मुख्य विचार और अंतर्दृष्टि पर ही यह लेख आधारित है। इसका शीर्षक भी डब्लू. ए. हार्ट के लेख के शीर्षक से प्रेरित है। हालाँकि अप्रत्यक्ष रूप से देखें तो जर्नल ऑफ़ फिलोसोफी ऑफ़ एजुकेशन के 'क्वालिटी' पर केन्द्रित एक विशेषांक (वॉल्यूम 30, नंबर 1, 1996) के लेखों में प्रस्तुत विचारों ने भी इस लेख को पोषित किया है.

कुलदीप गर्ग पिछले 12 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय हैं। आजकल अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, जयपुर के साथ काम कर रहे हैं।
सम्पर्क : kuldeep.garg@azimpremjiafoundation.org